(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

THE SWEET EXPERIENCES OF LIFE

Dr. A. Mukta Vani

Associate Professor, Dept of Sanskrit, Hindi Mahavidyalaya

Hyderabad

जीवन के सुमधुर अनुभव

डॉ. ए. मुक्ता वाणी

असोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

पूर्व पीठिकाः-

विश्वविभूति, जननायक, लोक कल्याणकनिष्ठ राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी की 60वीं पुण्यतिथि पर समायोजित समारोह में भाग लेते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। बापू के जीवन-काल को गान्धी-युग, सूक्ष्म सिद्धान्तों को गान्धीवाद और विचारों को आधुनिक युग में गान्धीगिरि के नाम से जाना जा रहा है। सत्यनिष्ठ श्री मोहनदास कर्मचन्द गान्धी का समस्त जीवन मानवमात्र ही नहीं, प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारक रहा है। ऐसे तपःपूत, स्वनामधन्य, स्वतन्त्रता सेनानी महात्मा गान्धी के अतिनिकट रहने का सौभाग्य कुछेक भाग्यशालियों को ही प्राप्त होता है। धन्य हैं समादरणीय डॉ. एम्. एस्. राजलिंगम् जी जिन्हें जीवन के अमूल्य दो वर्ष एक युगपुरुष, युगस्रष्टा के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं समझती हूँ इन्हीं दो वर्षों ने श्री एम्.एस्. राजलिंगम् जी को "बापू जी के सान्निध्य में मैं" शीर्षक से अमूल्य जीवन सार को अक्षर रूप में ढालने का स्वर्णिम अवसर प्रदान किया ।

ग्रन्थ समीक्षा :-

तेलुगु में मान्यवर श्री एम्. एस्. राजलिंगम् जी द्वारा विरचित 'बापू-मैं' का हिन्दी रूपान्तरकार लब्धप्रतिष्ठ हिन्दी साहित्यकार श्री वेमूरि राधाकृष्ण मूर्ति जी ने "बापू जी के सानिध्य में मैं" नामक शीर्षक से किया है। किसी भी रचना की समालोचना करने से पूर्व पं. गिरिधर शर्मा के ये ववन मेरे हृदय में हिलोरे लेने लगती हैं-

में जो नया प्रन्थ विलोकता है,

भाता मुझे सो नव मित्र सा है।

देखें उसे में नित बार-बार

भानो मिला मित्र मुझे पुराना ।। (कविता कीमुदी)

"प्रस्तके वे विश्वसनीय दर्पण है, जो सन्तों और महान् पुरुषों के मानसों को हमारे मानतो में प्रतिबिधित कर देती है।" एडवर्ड गियन

IJRSSH

यह सुक्ति प्रस्तुत ग्रन्थ पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। इसके अनन्तर गुरु शिवालयमूर्ति के साथ-साथ, गान्धी, नेहरू, टैगोर, राजेन्द्र प्रसाद, निर्मला देशपाण्डे आदि प्रमुख व्यक्तियों के चित्रों को देखकर प्रतीत होता है कि लेखक के जीवन में इन आदर्श महापुरुषों का प्रभाव स्पष्ट रूप से है। चरखा कातते हुए पूज्य बापू के चित्र के नीचे जो सूक्ति दी गई है-

"मैं कोई नया सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं कर रहा हूँ। मेरे आशयों और आध्यात्मिक तात्यों का चाहे तो आप प्रयोग कर सकते हैं। इसे आप गान्धीचाद मत कहिए। इसमें कोई वाद नहीं है।"

इससे ज्ञात होता है कि दूरद्रष्टा गान्धी जी का जो वास्तविक चिन्तन का स्वरूप था, उस पर हमे विचार करना चाहिए। "गान्धीवाद, महात्मा गान्धी की विधार-पद्धति का व्यापक नाम है। गान्धी के व्यक्तित्व के अनेक पक्ष थे। वे राजनेता, समाज सुधारक, अर्थवेत्ता, शिक्षाशास्त्री, धर्मोपदेशक, सत्ये के पुजारी और सही अर्थ में कर्मयोगों थे।"

गोपालकृष्ण गोखले कहते हैं "जो लोग प्रत्यक्षतया गान्धी जी के निकट सम्पर्क में आपे, वे ही उनके व्यक्तित्य की विशालता को आक सके। वीरों और हुतात्माओं को आकार प्रदान करने वाले रसायन से गान्धी जी का व्यजित विकसित हुआ है, बल्कि अपने समीप आये किसी भी सामान्य व्यक्ति को पीर पा हुतात्था वनरने की शक्ति उनमें है।"

प्रस्तुत में छः भाग है, जिसके अन्तर्गत पहले भाग में वेश बदल कर वर्धा पहुँचा" शीर्षक से 1940 में लेखक की आर्थिक स्थिति और सरकार के दवाव को चित्रित किया गया है।

द्वितीय भाग में ग्रामीण विद्यालय वर्धा में आधुनिक भारत के निर्माता प्रथम प्रधानमन्त्री नेहरू जी का भाषण देते समय अकस्मात् बिजली चले जाने का वर्णन है। एक बार लालटेन के प्रकाश में बोलते हुए पं. नेहरू ने कहा- "यही मेरा स्वतन्त्र भारत है।" थोड़ी देर बाद बिजली आई। पण्डित जी हँसते हुए बोले- "यह भविष्य का भारत है।" इस घटना को उद्धृत कर लेखक ने वह सिद्ध किया है कि नेहरू भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखने के लिए दृढ़ निश्चयी थे ।

तृतीय भाग में "पनवार" में विनोबा जी का आश्रम, पार्नीकर जी की गोसेवा, शोधकार्य - मक्खन से अधिक घी निकालना आदि संस्मरण भावपूर्ण एवं चिन्तनशील हैं। श्री पार्नीकर जी का यह कहना "मैं दिल से गोसेवा कर रहा हूँ, पर गोसेवा के बारे में शिक्षा पाने के लिए कोई भी नहीं आ रहा ।" ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उस समय गोसेवा की विधिवत् शिक्षा दी जाती थी। साथ ही लेखक शिक्षा प्राप्त्यर्थ अत्युत्साही थे। जो आज की पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। आज गायों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। जब कि महाभारत कहता है-

'मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः गाये विश्व की माताएँ हैं। तथा सुख प्रदान करती हैं। इसीलिए 'अखिल भारतीय गोसेवा संघ' की स्थापना की गयी, जिसके अन्तर्गत मक्खन से अधिक घी निकालने हेतु शोध सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया ।

प्रार्थना सभा, प्रार्थना का प्रयोजन, प्रार्थना से शान्ति विषयक गान्धी जी के प्रामाणिक यचनों को उद्धृत किया गया है, वे प्रसंगानुसार अति उत्तम है। जैसे "प्रार्थना मन के लिए आहार है। वह भगवान् एवं हमारे यीच के सहयोग को सूचित करती है ।"

IJRSSH

चतुर्थ भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण है. यदि यह कहा जाय कि यह अध्याय इस ग्रन्थ का शिलास्तम्भ है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि इसमें देशरत्न भारत के पुण्यप्रतीक महालय गान्धी द्वारा उपदिष्ट, आचरित ग्यारह व्रतों का विल्लेषण सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

यथा- अहिंसा सत्य अस्तेयो ब्रह्मचर्य असंग्रहः

शरीरथम अस्वादो सर्वत्र भयवर्जयेत् ।

सर्वधर्मसमानत्वे स्वदेशी स्पर्शभावना

ही एकादशसेवानि नम्रत्वे कृतनिश्चयेत् ।।

गान्धी जी के लिए सत्य और अहिंसा एक ही सनातन वस्तु के दो पहलुओं के समान हैं। सत्य की भाँति अहिंसा भी सर्वशक्तिशाली और असीम है तथा ईश्वर की समानार्थक है।

भय ही नहीं, किसी का है जब

करें किसी पर हम क्यों क्रोध

जियें विरोधी भी, विरोध हो,

पायेगा इससे परिशोध ।

अस्त्र अपूर्व अमोघ हमारा,

निश्चित है निष्क्रिय प्रतिरोध ।

प्रतिपक्षी भी रण में हम से

पावें प्रेम, प्रसाद प्रबोध ।

रक्तपात वीरत्व नहीं,

वह है बीभत्स विधान ।

सुनो-सुनो भारत सन्तान ॥

"गान्धी-विचारधारा में सत्य और अहिंसा तत्वों का रचनात्मक अथवा कर्ममय रूप सत्याग्रह है। उसके द्वारा सर्वोदय की साधना करने वाला साधक सत्याग्रही. है। गान्धीवाद में यह अस्त्र हृदय-परिवर्तन पर अवलंवित और आत्मबल का प्रतीक है। गान्धी जी ने अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए यह पद्धति आविष्कृत की थी, जो प्रतिपक्षी को प्रेम से जीतने की धारणा पर आधारित है।" (गान्धीवाद हिन्दी काव्य पृ.184)

'सशस्त्र संग्राम' शीर्षक के अन्तर्गत शहीद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, वीर सावरकर और बालगंगाधर तिलक के शौर्यपूर्ण बलिदान की गाथा सहित किन्तु हृदय को झकझोर कर देनेवाली है। ऐसे वीरवरों को में बद्धा सुनन समर्पित करती हूँ।

IJRSSH

यथा - अभिनन्दन है उन वीरों का, जीवन तिल-तिल जल्ला गये जो। राष्ट्र-प्रेम का पाठ पढ़ा कर, हमको जीना सिखा गये जो ।। 'बापू की हठता' शीर्षक में माँ कस्तूरबा द्वारा गान्धीजी की समय के प्रति प्रतिवद्धता को सूचित किया गया है।

"कार्य करने के लिए धीरता, स्थिरता तथा आत्मविश्वास अत्यन्त आवश्यक है। इन तीन लक्षणों के साथ आत्मानुशीलन भी हो तो व्यक्ति के लिए असाध्य कुछ नहीं रहता ।" ये प्रेरणास्पद वाक्य हमें लक्ष्य की ओर उन्मुख करते हैं।

बापू सदा आडम्बरता से दूर रहते थे, इसीलिए फोटो लेते समय बापू ने अपने उत्तरीय से मुँह ढक लिया। पुस्तक के मध्य भाग में साथियों के साथ हास-परिहास का वर्णन किया गया है। जो ग्रन्थ की रोचकता में वृद्धि करता है।

'गान्धी और जिन्ना की भेंट' शीर्षक के अन्तर्गत दत्ते नामक व्यक्ति बापू के पास आकर कहता है "जिन्ना आपके लिए गड्ढा खोद चुका है।" तब बापू ने कहा- 'जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, उसमें वह खुद गिरता है।' ये वाक्य बापू की दूरदर्शिता को प्रकट करते हैं। इस समय हमारे पड़ोस की स्थिति ऐसी ही है।

श्रद्धेव परचूरू शास्त्री द्वारा प्रसंगवश कहे गये श्लोक को अर्थ सहित ग्रन्थ में दिया जाता तो इसकी गरिमा और बढ़ जाती थी ।

पंचम भाग में दो वर्षों याद पली से मिलन, आश्रम से विदाई, व्यापारी की मनोवृत्ति आदि घटनाएँ साधारण मनुष्य की इतिवृत्तियों एवं संवेदनाओं को यथार्थ रूप से चित्रित करती हैं।

पष्ठ भाग में स्वयं लेखक रचनात्मक कार्यक्रमों की ओर अग्रसर होते हैं। चित्त की शुद्धता, सत्संकल्प, दीक्षा, लगन, दृढ़ विश्वास के साथ लेखक ने 'खादी चरखा संघ' की स्थापना की। प्रिय मित्र प्रभाकर जी का पर उनके लिए पथप्रदर्शक बना ।

वन्दनीय गान्धीजी की अन्तिम यात्रा पढ़ते हुए, उन की शवयात्रा के समय लाहौर रेडियो स्टेशन से एक गहन गंभीर स्वर, जिसके कण-कण में वेदनामय रुदन मूर्तिमान् था, उसे स्मरण करने लगा -

ऐ कौम अब न छूटेगा दामन से तेरे दाग

गुल तूने अपने हाथ से अपना किया चिराग ।

गान्धी को कत्ल करके वो तोड़ा है तूने फूल

तरसेगा लहलहाने को अब एशिया का बाग ।।

उपसंहार –

इस प्रकार श्रद्धादरसमन्वित श्री एम्. एस्. राजलिंगम जी ने अपनी स्मृतियों को बड़ी सरल भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया है। भाषा के सन्दर्भ में प्रस्तुत ग्रन्य के अनुवादक आदरणीय श्री वेमूरि राधाकृष्णमूर्ति जी साधुवाद के पात्र हैं। आपने रिक्त स्थानों पर पूज्य बापू के अमर वचनों को प्रकाशित किया है। जिससे ग्रन्थ की गरिमा बढ़ी है, साथ ही अधिक उपादेय बन गया है। यह ग्रन्थ सूत्र रूप में है। इस पर शोधकार्य विस्तृत ढंग से किया जा सकता है। शैली में उत्साह, उल्लास, उमंग और स्फूर्ति भरी हुई है। पुस्तक के

IJRSSH

अन्तिम पृष्ठ में 'बापू जी की अमर वाणी' के अन्तर्गत लेखक ने पूज्य बापूजी के जो 'तीन विचार' प्रस्तुत किये हैं, वे अतीव सामयिक हैं। मैं समझती हूँ इस ग्रन्थ की माँग बढ़ेगी, क्योंकि कहा गया है-

वह पुस्तक किस काम की, जिसकी माँग न होय ।

वन में नाचा मोर है, देख सके न कोय ।।

लेखक ने अपने साहित्य में भारतीय वाग्मिता और अस्मिता को व्यंजित करने का प्रयास किया है। अतः प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकों एवं अनुसन्धाताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा ।

महानता की पहली शर्त सादगी और मनुष्य का गौरव - सफलता को माना गया है। इन गुणों से विभूषित, महिमामण्डित महात्मा गान्धी के साथ व्यतीत किये संस्मरणों को लिपिबद्ध कर श्री एम्.एस्. राजलिंगम् जी सफलीकृत हुए हैं।

अन्त में कवि के शब्दों में -

चिडिया की फड़फड़ाहट तो सुनाई देती है

शिकारी मगर

पहचान में नहीं आते अब

अदृश्य शिकारी को पकड़ने के लिए

एक अदृश्य जाल चाहिए

भारत को फिर से

गान्धी की सोच का कमाल चाहिए ।।

IJRSSH